# शोध-संक्षेपिका

## पी॰ एच॰ डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तुत किए गए मेरे शोध-प्रबंध का शीर्षक है- "अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में चेतनावादी स्वर"

**प्रस्तावना-**

साहित्य और समाज परस्पर अनुपूरक तथा अन्योन्याश्रित संबंधों पर निर्भर रहते हुए अपना भौतिक अस्तित्व सुनिश्चित करते हैं। साहित्य और समाज के मध्य सुनिश्चित उसी प्राणवायु संबंध के कारण दोनों अपने उद्देश्य की सफलता सुनिश्चित करते हैं अंत: इनमें से किसी एक की अनुपस्थिति में दूसरा स्वयं भी अस्तित्वविहीन हो जाता है। दरअसल जिस तरह से साहित्य की सत्ता व्यक्ति एवं व्यक्तियों के संगठन अर्थात समाज की सत्ता में अंतर्ग्रस्त होती है ठीक उसी तरह से व्यक्ति एवं समाज की चतुर्मुखी उन्नति के लिए साहित्य की वर्तमानता या उपयोगिता अनिवार्य होती है। समाज के बिना साहित्य दर तक फैले हुए लेकिन संवेदनशून्य पर्वतमाला के समान है तो साहित्य के अभाव समाज किसी अपंग व्यक्ति से अधिक कुछ नही है जो केवल सांसे लेने के लिए ही जीवित है और जिसकी जड़ता ने उसकी मानसिक और भौतिक उन्नति के सभी भाग अवरुद्ध कर दिए है। साहित्य और समाज के मध्य स्थिति इसी संबंध के दृष्टिगत मीमांसकों अथवा विचारको ने साहित्य को समाज का दर्पण कहा है, क्योंकि साहित्यकार या तत्व मीमांसक जिस समाज या देशकाल से अंतसंबधित होता है उन्ही से संबंधित घटनामक वृत्तियों तथा चित्तवृत्तियों को यथार्थपरक अंकन की प्रक्रिया द्वारा अपनी रचना या मीमांसा ने प्रतिबिम्ब स्वरूप समाज के समय समक्ष प्रस्तुत कर देता है। ध्यातव्य भी है दर्पण भी इसी सैद्धांतिकी का अनुपालन करते हुए किसी व्यक्ति वस्तु या पदार्थ के बाह्य स्वरुप का वास्तविक प्रतिबिम्ब निर्मित करता है। अभिकथन का तात्पर्य यह है कि साहित्य और समाज के मध्य का आपसी संबंध सर्जक की देशकाल और वातावरण की युगीन परिस्थितियों और जनचित्तवृत्तियों के माध्यम से सम्बद्ध

होता है। इसे  सरल शब्दों में कहना चाहे तो कह सकते हैं कि युगबोध के रूप में रचनाकार अपने समय एवं परिवेश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक परिस्थितियों, अनुभूतियों, मनोवृत्तियो व आवश्यकताओं एवं घटना-व्यापारो आदि को ही अपनी विशिष्ट प्रज्ञाजन्य रचनाधर्मिता के माध्यम से अक्षरबद्ध करके अपनी रचनाओ मे उडेल देता है। इस समग्र क्रियान्व्यापार में परिस्थितियों की यथार्थता के साथ-साथ सर्जक की स्वानभूतियाँ तथा उसकी वैचारिकता एवं काल्पनिकता का भी विशिष्ट अवदान रहता है।

इसलिए जो रचनाकार अपने युगबोध से अर्थात् अपने देशकाल और वातावरण की परिस्थितियों से जितनी अधिक घनिष्ठता के साथ सम्बद्ध होगा, वह जितना अधिक अपने युगबोध की ग्राहक कल्पना रचनाधर्मिता से युक्त होगा, उसकी लेखनी से निसृत सर्जनाएँ उतनी अधिक सामाजिक प्रभावोत्पादकता के अतिरिक्त कालातीत किस्म की होंगी। समकालीन साहित्य सर्जक अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्त्व एवं उसकी सृजनशीलता से निसृत सर्जनाएँ इसी प्रवृत्ति की पोषक-संरक्षक रही है।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के अंतिम दशकों में साहित्येतिहास के नक्षत्राकाशा मे उदित होकर भोर के तारे की भाँति समकालीन हिन्दी साहित्य को प्रदीप्त करने वाले अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपनी संख्यातीत अमूल्य सर्जनाओं के माध्यम से तदयुगीन सामाजिक विसंगतियो एवं विद्रूपताओं से प्रादुर्भूत अंधकार को दूर करने का सफल प्रयत्न किया है। इसके अतिरिक्त इसकी सर्जनाये युगीन सामाजिक जड़ता को दूर समाज को चेतनता और गतिशीलता की ओर धकेलने का कार्य करती है। बिस्मिल्लाह जी ने अपने बहुआयामी व्यक्तित्व में विशिष्ट प्रज्ञाजन्य नैसर्गिक, प्रतिभायुक्त सृजनशीलता का सनिवेश करते हुए अपने सृजन कार्य को आद्यंत मौलिक, प्रासंगिक एवं प्रभावोत्पादक बनाए रखा है। इनके समस्त रचना-कर्म में विगत शताब्दी के आठवे दशक से लेकर वर्तमान इक्कीसवीं सदी दूसरे दशक तक के भारत की समकालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक,

धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ, प्रवृत्तियाँ, विसंगतियाँ एवं चित्तवृत्तियाँ आदि के साथ-साथ एतद्विषयक परम्पराएँ, मूल्य और विचारादि का प्रकीर्णन दिखाई देता है। अपनी बहुआयामी प्रतिभा के अनुरूप विस्मिल्लाह जी ने हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं को अपनी लेखनी का प्रसाद प्रदान कर किया है। उपन्यास यद्यपि अपनी उत्कृष्ट वैचारिकता के माध्यम से अब्दुल बिस्मिल्लाह ने साहित्य की अनेक आधुनिक विधाओं, मसलन- उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता, समालोचना, बाल साहित्य एवं संपादन-कार्य आदि की सर्जनात्मक श्रीवृद्धि की है लेकिन इनके मात्रात्मकता एवं गुणात्मकता दोनों दृष्टियों से इनके कथा-साहित्य की विशेष महत्ता रही है। दरअसल कथा-साहित्य के अंतर्गत आने वाली कहानी और उपन्यास साहित्य की ऐसी विधाएं हैं जो कौतूहलता, सरलता एवं रोचकता आदि प्रवृत्तियों के कारण सह-व्यापक जनसमूह तक प्रसारित होती है। इसके अतिरिक्त इनमे अपने भावों विचारों को स्वगत या पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करने के लिए रचनाकार के पास पर्याप्त स्थान होता है। इसी तरह कहानी और उपन्यास आदि की सम्यक बोधगम्यता के लिए पाठक में किसी विशेष प्रकोर की योग्यता भी अपेक्षित नही होती है। अभिकथन का अभिप्राय यह है कि सर्जक और सहृदय दोनों के लिए क्या साहित्य दुसरी अन्य विधाओं की समतुल्यता में कहानी और उपन्यास विधाएँ अधिक प्रभावी एवं उपयोगी होती हैं तथा इनकी सामाजिक प्रभविष्णुता भी चिरकालिक, तीव्र एवं लोककल्याणकारी प्रकृति की होती है।

समकालीन साहित्य-सर्जक अब्दुल बिस्मिल्लाह ने यद्यपि साहित्य की अनेक विधाओं में सेवा शुश्रवा की है लेकिन साहित्य-अध्येयताओं और मीमांसको की दृष्टि में ये कथाकार का अभिधान प्राप्त रचनाकार ही हैं अर्थात साहित्य-संसार इन्हें कथाकार के रूप में ही देखने-समझने का अभ्यासी रहा है। कारण यह है कि इनकी कथात्मक रचनाएँ यात्रा एवं परिमाण दोनों में अन्य विधागत योगदान की समतुल्यता में अधिक रही हैं। इन्होंने नाटक, कविता, बाल-साहित्य, समालोचना आदि विधाओं में सम्मिलित रूप से जितनी रचनाएँ की हैं उससे कहीं अधिक संख्या में इनके द्वारा प्रणीत कहानियों और उपन्यासों की रही है। समर शेष है,

दंतकथा, मुखड़ा क्या देखे अपवित्र आख्यान, जहरबाद तथा रावी लिखता है, आदि जहाँ इनके अत्यंत ख्यातिलब्ध उपन्यास है वहीं इनके बहुचर्चित कहानी संग्रहों में टूटा हुआ पंख, कितने-कितने सवाल, रैनबसेरा, अतिथि देवो भव, जीनिया के फूल और रफ-रफ मेल आदि का नाम लिया जा सकता है जिनमें संख्यातीत कहानियाँ संकलित हैं। मात्रात्मकता का यही संदर्भ बिस्मिल्लाह जी के कथासाहित्य की प्रवृत्तियों पर भी लागू होता है अर्थात् विचारशीलता, सामाजिक प्रभावोत्पादकता, तथा देशकालातीत व्यापाकता आदि दृष्टियों से उनकी दूसरी विधाओं की समतुल्यता में उनके उपन्यास और कहानियाँ अधिक उत्कृष्ट किस्म की ठहरती हैं। ग्रामीण जीवन एवं मुस्लिम समाज के संघर्ष, संवेदनाओं एवं यातनाओं आदि को केन्द्र में रखकर लिखे गए इस कथासाहित्य समकालीन भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक में चेतना विषयक स्वर तीव्रता तथा बहुलता से सुना जा सकता है। ये रचनाएँ मुस्लिम समाज के विविध जीवन-संघर्षो के साथ-साथ विविध मानव-जीवन के विविध क्षेत्रों में व्याप्त संगतियों-विसंगतियों को अत्यंत सहजता एवं स्वाभाविकता से चित्त लिखित सी कर देती है। अपनी रचनाओ मे अपने भौतिक एवं सामाजिक परिवेश के सर्वाधिक समीपस्थ रहने वाले बिस्मिल्लाह जी का कथा-साहित्य स्वानुभूतियों की अभिव्यक्ति के अतिरिक्त अपने देशकाल एवं वातावरण को प्रतिबिम्बत करने वाला दर्पण रहा है। इसे यो भी कह सकते हैं कि वे अपनी कहानियों और उपन्यासों में जीवन के विविध क्षेत्रों के संदर्भ में स्वयं भी जागृत ले रहे हैंं और सहदयो (पाठकों) को भी जागृत करते रहे हैं। उनके दया साहित्य की इसी वैशिष्ट  ग्राह्यता ने मुझे शोध-कार्य हेतु आकर्षित किया जिसके कारण मैंने अब्दुल बिस्मिल्लाह के कया-साहित्य में चेतनावादी स्वर शीर्षक विषय को शोध-कार्य हेतु चयनित किया।

**प्रस्तावित शोधकार्य मे ज्ञान की वर्तमान दशा-**

हिन्दी साहित्य के ख्यातिलब्ध कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपनी उत्कृष्ट रचनाधर्मिता के माध्यम से न केवल साहित्य की लगभग सभी विधाओं का उन्नयन किया अपितु अपनी मानवतावादी वैचारिकता, तार्किकता एवं आधुनिक दृष्टिकोण आदि के माध्यम से समाज को विविध प्रकार से  जागृत करने का भी प्रयास किया। वैसे तो मेरी प्राप्त जानकारी के अनुसार अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य के संदर्भ में अग्र लिखित अनुसंधान कार्य हुए हैं-

1- अब्दुल बिस्मिल्लाह का कथा: साहित्य: विविध आयाम श्री इन्नुस समसुद्दीन शेख, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर (महाराष्ट्र) 2004

2- अद्धल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में बहु सांस्कृतिक विमर्श,  शिवकुमार यादव लखनऊ विश्वविद्यालय- 2019

3- अब्दल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में वर्तमान (समान्याओं से जूझता आम-आदमी- बाबा साहेब आबेडकर मराठावाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद

4- अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन 2008 रवीन्द्रकुमालवली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी पंजाब-2019

5- कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचना- दृष्टि, श्रीमती शिल्पालाले गोवा विश्वविद्यालय- 1999

6- अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में सामाजिक सरोकार, सीमा कुमारी दश भाग विश्वविद्यालय मंडी गोविन्दगढ़

7- अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासो में व्यक्त में मुस्लिम विमर्श, मणियार अखिल बाबूसाठा, स्वामी रामानंदतीर्थ मराठावाडा विश्वविद्यालय, नांदेड-2016

उपर्युक्त शोध-कार्यो का अन्वीक्षण-परीक्षण या अवलोकन से स्पष्ट हो जाता है कि 'अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में चेतनावादी स्वर' विषय पर अभी तक कोई शोध-कार्य प्रकाशित नहीं हुआ है। इस दृष्टि से मेरा यह कार्य मौलिक एवं नितांत नवीन है जिसके माध्यम से मैं अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में अभिव्यक्त चेतना के विविध स्वरूपों को सामने लाने का पक्षपात रहित एवं  मौलिक प्रयास करूँगा।

**प्रस्तावना का मूल स्रोत-**

प्रस्तावित शोध-कार्य मे अब्दुल बिस्मिल्लाह का समग्र-मौलिक साहित्य मूल स्रोत के संदर्भ में व्यवहँत किया जायेगा, जिसमे उपन्यास- समर शेष है, झीनी-झीनी बीनी चदरिया, जहरवाद, दन्तकथा एवं मखड़ा क्या देखे।

कहानी संग्रह-टूटा हुआ पंख, कितने-कितने सवाल, रैन बसेरा, अतिथिदेवो भव, जिनिया के फूल, और रफ रफ मेल।

काव्य-संकलन- मुझे बोलने दो, छोटे बूतों का बयान, बलीमुहम्मद और द करीमन बी की कविताएँ, और किसके हाथ गुलेल।

नाट्य संग्रह- दो पैसे का जन्नत

आलोचना साहित्य- अल्पविराम, विमर्श के आयाम

लोक-साहित्य- लोक-काव्य विधा 'कजरी'

बाल-साहित्य- अजगर का पेट

आदि ग्रंथ सम्मिलित है।

**प्रस्तावना का लक्ष्य-**

कारयित्री एवं भावयित्री प्रतिभा के सम्मिलन से निर्मित उत्कृष्ट वैचारिकता एवं विशिष्ट रचनाधर्मिता के संपोषक-संरक्षक व सामाजिक प्रकृति के समकालीन कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह निवर्तमान शताब्दी के आठवें दशक से लेकर अंतिमदर्क तक के कालखण्ड मे हिन्दी साहित्य रूपी नक्षत्राकाश को अपनी सर्जनाओं रूपी तारों के माध्यम से सर्वाधिक आलोकित करने वाले ख्यातिलब्ध साहित्यकार रहे है। विवेच्य तीन दशको की समयावधि में उनकी सृजनशीलताये साहित्य की विविध विधाओं संबंधी अगणित रचनात्मक विधियाँ हिन्दी के साहित्य अधिकोष को प्रदान किया है। विश्वविद्यालयी शिक्षा के दौरान स्नातक, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम मे सम्मिलित समकालीन साहित्य के अध्ययनांतर्गत मुझे अब्दुल बिस्मिल्लाह के समग्र साहित्य को अध्ययन-अनुशीलन का अवसर मिला जिससे मैं इनकी रचनाधर्मिता की सामाजिक प्रभावोत्पादकता, समसामयिक उपयोगिता, तार्किक विचार शीलता आदि से परिचित हुआ। इस संदर्भ मे निरन्तर बढ़ती अभिरुचि के परिणामस्वरूप गहन अध्ययन-अनुशीलन के द्वारा में न केवल बिस्मिल्लाह जी की विविध आयामी चेतनाओं से अवगत हुआ बल्कि इनकी सृजनात्मकता के विधागत वैविध्य से भी परिचित हुआ। हिन्दी साहित्येतिहास परम्परा में अब्दुल बिस्मिल्लाह कथाकार को अभिधान प्राप्त साहित्य सर्जक है जिनकी संख्यातीत कहानियों एवं बहुसंख्यक उपन्यासों में अंतर्भुक्त चेतना अपनी विविध प्रकृतियों में प्रकीर्णित होकर निरंतर समाज एवं साहित्य का हित साधन कर रही है। लेकिन इस बहुआयामी चेतना पर अभी तक न ही साहित्य मीमांसकों ने ही और न ही अनुसंधानार्थियों ने ही सम्यक, समग्र और तटस्थ दृष्टिपात किया है जिसके कारण एक आकाशधर्मा साहित्यकार की साहित्यिक विशिष्टता का आयाम परिमित और उपेक्षित होकर रह गया है।

अब्दल बिस्मिल्लाह के साहित्यानुशीलन एवं अन्वेषणोपरान्त यह सिद्ध होता है कि इनके कथा-साहित्य में अंतर्यक्त चेतना का स्वरूप विविधता पूर्ण रहा है। दरअसल ये अपने

देशकाल और वातावरण के प्रति सर्वाधिक सजग साहित्य-सर्जक थे इसलिए अपने समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों, चित्तवृत्तियों व घटना-व्यापारो आदि के प्रति इनका अनन्य अनुरागी होना स्वाभाविक ही है। अपने देशकाल और वातावरण के प्रति बिस्मिल्लाह जी का यह अनुराग भाव एवं विचार के स्वरूप में इनके कथा-साहित्य में अभिव्यक्त हुआ है। क्योंकि कहानी और उपन्यास दोनों साहित्य की ऐसी विधाएँ हैं जो अपने स्वरूप एवं कौतुकता आदि प्रवृत्तियों के चलते न केवल सहृदयों के व्यापक वर्ग को प्रभावित करती है अपितु दूसरी विधाओं की समतुल्यता में समाज में अधिक तीव्रता से अपना प्रभाव प्रक्षेपित करती है। इनकी इसी प्रवृत्ति के दृष्टिगत अब्दुल बिस्मिल्लाह ने साहित्य एवं साहित्यकार के अपने नैतिक उत्तरदायित्वों का निवर्हन करते हुए अधिकांश मात्रा में कहानियों और उपन्यास की रचना करके सहृदयों को चेतनशील बनाने का सफल प्रयत्न किया है। बिस्मिल्लाह जी द्वारा प्रादुर्भूत अथवा प्रकीर्णित यह चेतना जीवन के लगभग सभी पक्षों मसलन- सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आदि से संदर्भित रही है जिसका व्यवस्थित एवं सुक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन-विश्लेषण करने के लिए ही मैंने शोध विषय के रुप में 'अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में चेतनावादी स्वर' जैसे नितांत नवीन और मौलिक विषय को का चयन किया है। अध्ययन की  सुविधा एवं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मैने इस शोध कार्य को छः अध्यायों में विभक्त किया है जिनसे अनेक मौलिक उद्देश्यो की पूर्ति की संभावनाएँ बनती हैं-

**प्रथम अध्याय-** के अध्ययन से अब्दुल बिस्मिल्लाह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय प्राप्त किया जाएगा।

**द्वितीय अध्याय-** चेतना का अर्थ, परिभाषा स्वरूप एवं सामाजिक साहित्यिक उपयोगिता आदि को उद्घाटित करता है।

**तृतीय अध्याय-** के अध्ययन से अब्दुल बिस्मिल्लाह उपन्यासों में अंतर्निहित चेतना के विविध स्वरूपों का ज्ञान हो सकेगा।

**चतुर्थ अध्याय-** इस अध्याय का अध्ययन-अनुशीलन अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में अंतर्भुक्त चेतना के विविध आयामी प्रकृति का विवेचन-विश्लेषण करता है।

**पंचम अध्याय-** में अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य के कलापक्षीय वैशिष्ट्य का मूल्यांकन किया गया है जबकि छठा अध्याय उपसंहार के रूप में सभी अध्यायों को प्राप्त निष्कर्ष प्रकट करता है।

## शोध-प्रविधि

"अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में चेतनावादी स्वर शीर्षक शोध-विषय को कार्य-रूप में परिणत करने हेतु मैंने अवलोकनात्मक, आलोचनात्मक, विवेचनात्मक विश्लेषणात्मक तार्किक एवं ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग किया है जिससे एतद्विषयक कारकों को यथार्थपरकता के साथ अभिव्यक्त करने में विशेष सहायता मिली है।

## अनुमानित अध्याय योजना

**'अद्‌भुत बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में चेतनावादी स्वर'**

**प्रथम अध्याय : अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक अध्ययन**

1.1 जीवन-वृत्त का विश्लेषण

1.2 साहित्यिक अवदान का अनुशीलन

1.2.1 गद्य-साहित्य का परिचय

1.2.2 पद्म- साहित्य का अवलोकन

1.3 पुरस्कार एवं सम्मान

## द्वितीय अध्याय : चेतना: अर्थ, प्रकृति और प्रयोग

2.1 चेतना का अर्थ और परिभाषा

2.2 चेतना का दार्शनिक संदर्भ

2.3 चेतना की स्वरूपगत विविधता

2.3.1 सामाजिक चेतना

2.3.2 आर्थिक चेतना

2.3.3 राजनीतिक चेतना

2.3.4 धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना

2.3.5 साहित्यिक चेतना

2.4 सामान्य जीवन एवं लोक व्यवहार में चेतना की आवश्यकता और महत्व

## तृतीय अध्याय : अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास- साहित्य में अभिव्यक्त चेतना का स्वरूप

3.1 आर्थिक चेतना की स्थिति

3.2 सामाजिक चेतना का संदर्भ

3.3 राजनीतिक चेतना की व्यापकता

3.4 धार्मिक चेतना की विस्तीर्णता

3.5 सांस्कृतिक चेतना की प्रसारता

**चतुर्थ अध्याय : अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में अंतर्भुक्त चेतना का स्वरूप**

4.1 आर्थिक चेतनावादी स्वर

4.2 सामाजिक चेतना का संदर्भ

4.3 राजनीतिक चेतना के प्रति सजगता

4.4 धार्मिक चेतना की वर्तमानता

4.5 सांस्कृतिक चेतना का संरक्षण

**पंचम अध्याय : अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य का कलापक्षीय वैशिष्ट्य**

5:1 भाषाई सौंदर्य

5.2 शैलीगत वैविध्य

**षष्ठ अध्याय :**

उपसंहार

**संदर्भ-ग्रंथ सूची**

परिशिष्ट 'क'- आधार-ग्रंथ

परिशिष्ट 'ख'- सहायक-ग्रंथ (हिन्दी)

परिशिष्ट 'ग'- सहायक-ग्रंथ (संस्कृत)

परिशिष्ट 'घ'- सहायक पत्र-पत्रिकाएँ

## संदर्भ-ग्रंथ सूची

## परिशिष्ट : 'क' - आधार ग्रंथ


1- समर शेष है, अब्दुल बिस्मिल्लाह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण- 1984

2- झीनी-झीनी बीनी चदरिया, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली- 1986

3- दंतकथा, अब्दुल बिस्मिल्लाह वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990

4- मुखडा क्या देखें, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली- 1996

5- अपवित्र आख्यान, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली- 2008

6- रावी लिखता है, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2010

7- टूटा हुआ पंख, अब्दुल बिस्मिल्लाह, आलेख प्रकाशन, नई दिल्ली- 1977

8- कितने कितने सवाल अब्दुल बिस्मिल्लाह, पराग प्रकाशन दिल्ली- 1984

9- रैन बसेरा, अब्दुल बिस्मिल्लाह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली- 1989

10- अतिथिदेवो भव अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- 1990

11- जीनिया के फूल, अब्दुल बिल्मिल्लाह, प्रेम प्रकाशन, दिल्ली- 1991

12- रफ रफ मेल, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली- 2000

13- शादी का जोकर, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन दिल्ली- 2013

14- जहरवाद, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण- 2016

15- कुठाँव, अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण- 2019

**परिशिष्ट : "ख" सहायक ग्रंथ (हिंदी)**

1- अब्दुल बिस्मिल्लाह का कथा साहित्य, डॉ० वसीममक्रानी, चन्द्रलोक प्रकाशन कानपुर- 2009

2- कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह, संपादक- डॉ० एम० फिरोज खान, डॉ० ए० के० पाण्डेय, अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्डीब्यूटर्स, कानपुर- 2017

3- नागार्जुन के कथा-साहित्य में जनवादी चेतना, डॉ० रामकृष्णा दत्तात्रयवढने वान्या

पब्लिकेशन्स, कानपुर-2015

4- अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य में संघर्षरत आम आदमी, डॉ० शेख शरफोदीन

फक्रोद्दीन, वान्या पब्लिकेशन्स कानपुर- 2017

5- राष्ट्रीय चेतना के आयाम, डॉ० रमेशचन्द्र शर्मा, साहित्य निलय, कानपुर- 2019

6- हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, डॉ० अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण- 2018

7- भारतीय काव्यशास्त्र के नए आयाम, मनोहर काले, पेनमैन पब्लिशर्स दिल्ली संस्करण- 1922

8- काव्यभाषा पर तीन निबंध, रामस्वरूपचहर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण-1988

9- साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन संपादक- निर्मला जैन, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन, निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय संस्करण- 2009

10- विवेचना, इलाचन्द्र जोशी, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग- 2000

11. हिन्दी आलोचना का दूसरा पाठ, निर्मला जैन, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण- 2014

12- रचना के सरोकार, विश्वनाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,1986

13- साहित्यालोचन, डॉ0 श्यामसुंदर दास, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2010

14- हिंदी साहित्य : उदभव और विकास, हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली- 1995

15- हिंदी साहित्य का आदिकाल हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, सस्करण-1985

16- हिन्दी आलोचना का विकास, नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण-1981

17- विश्व साहित्यशास्त्र, संपादक -डॉ• नगेन्द्र, नागरीप्रचारिणी सभा वाराणसी,संवत - 2042 वि० सं०

18- हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक -डॉ• नगेन्द्र, सह संपादक- डॉ• हरदयाल,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली संस्करण-2012

19- आलोचना में सहमति - असहमति, मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2013

20- आजके सवाल और साहित्य, संपादक-मनोज पाण्डेय, विश्वभारती प्रकाशन नागपुर, संस्कान-2015

21- भारतीय साहित्य, संपादक- डॉ• लक्ष्मीकांत पाण्डेय, डॉ० प्रमिल अवस्थी, आशीष प्रकाशन, कानपुर, संस्करण- 2014

22- हिन्दी कहानी : सृजन एवं विवेचन, डॉ० देवयानी भट्ट, आधारशिला प्रकाशन, हल्द्वानी नैनीताल संस्करण- 2015

23- पाश्चात्य काव्यशास्त्र अधनातन संदर्भ, लोकभारती प्रकाशा, उबाहाबाद, सत्यदेव मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद - 2016 7 समीक्षा की समस्याएँ, गजानन माधव मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण-1982

25- श्रृंखला की कड़ियां, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद - 2012

26- भारतीय भाषा विज्ञान, आचार्य किशोरीदास वाजपेयी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण- 1999

27- हिंदी साहित्य: बीसवी शताब्दी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण- 1966

28- छायावाद, डॉक्टर नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2016

29- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, डॉ० बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण- 2009

30- हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण- 2011

31- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, योगेन्द्र प्रताप सिंह, श्यामा प्रकाशन संस्थान - इलाहाबाद, संस्करण- 2011

32- आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉक्टर बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद संस्करण- 2013

33- आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण- 2018

34- साहित्य का इतिहास दर्शन आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा

परिषद पटना, संस्करण- 1960

35- परम्परा का मूल्यांकन, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली- 1981

36- दूसरी परम्परा की खोज, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- 1983

37- आस्था और सौंदर्य, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- 1990

38- भारतीय काव्य-विमर्श, राममूर्ति त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2001

39- भाषा - विज्ञान, संपादक - डॉक्टर कर्ण सिंह, साहित्य भण्डार मेरठ, संस्करण- 2002

40- पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत, डॉक्टर शांन्ति स्वरूप गुप्त, अशोक प्रकाशन, दिल्ली संस्करण- 2009

41- आचार्य रामचन्द्र शक्ल : आलोचना का अर्थ : अर्थ की आलोचना, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण- 2001

42- साहित्य सौंदर्य और संस्कृति, गोविंदचन्द्र पाण्डेय, हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद संस्करण-1994

43- हिंन्दी आलोचना : अतीत और वर्तमान, प्रभाकर माचवे, हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद, संस्करण- 1988

44- हिन्दी की विशिष्ट आलोचनात्मक दृष्टियों, संकलनकर्ता- डॉक्टर विजेन्द्र सिंघल, कला-मंदिर, नई दिल्ली, संस्करण- नवीनतम

45- साहित्य और उसके सामाजिक, सोपान, संपादक- प्रमोद शर्मा, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर संस्करण- 2015

**परिशिष्ट : 'ग'. सहायक ग्रंथ (संस्कृत)**

1- ध्वन्यालोक, आनंदवर्धन, व्याख्यान जगन्नाथ पाठक, चौखंभा विद्याभवन वाराणसी, संस्करण-1990

2- नाट्यशास्त्र, भरतमुनि, व्याख्यान एवं रूपातंरित- डॉक्टर पारसनाथ द्विवेदी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, संस्करण- 2001

3- काव्य प्रकाश, मम्मट, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, संस्करण- 2000 वि० सं०

4- वाल्मीकि रामायण, वाल्मीकि, अनु०- द्वारका प्रसाद शर्मा चतुर्वेदी, रामनारायणलाल शर्मा, इलाहाबाद, संस्करण-1958

5- साहित्य दर्पण विश्वनाथ व्याकरणिक -शालिग्राम शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, संस्करण-1977

6- काव्यानुशासन, हेमचन्द्र, निर्णय सागर प्रेस-1901

**परिशिष्ट: 'घ' सहायक पत्र-पत्रिकाएँ-**

1- अभिनव कदम - 35 अंक- 35 जून- दिसम्बर-2016, प्रकाश निकुंज प्रकाशन, मऊ, उत्तर-प्रदेश

2- आलोचना, त्रैमासिक (अंक-58), अप्रैल-जून-2016, राजकमल नई दिल्ली,

3- आजकल, अप्रैल-2016. प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली

4- इन्द्रप्रस्थ भारती अंक- 3-4, जुलाई-दिसम्बर-2008 हिन्दी अकादमी नई दिल्ली

5- तद्भव, अंक-1 नवम्बर- 2016, दिल्ली

6- दस्तावेज सितम्बर- 1998

7- साक्षात्कार, अगस्त-नवम्बर-1984

8- समकालीन भारतीय साहित्य- अंक-156, जुलाई-अगस्त- 2011, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली

9- सुधा, जुलाई- 1933, लखनऊ

10- सम्मेलन पत्रिका (त्रैमासिक), अक्टूबर-दिसम्बर- 2020, साहित्य सम्मेलन प्रयाग

11- हंस, मई- 1998 ; नई दिल्ली

12- कसौटी (अंक-3) अक्टूबर-दिसम्बर-1999, पटना